# हमारा प्रयास

**श्रीमती बसंतीबाई लक्ष्मीनारायण चांडक रिसर्च फाऊंडेशन, अकोला**
(रजि नं.ई. 219)
**व्दारा संचालित**

# बसंती हॉस्पीटल

रामदास पेठ, अकोला • फोन नं.0724- 2411711/2444863

# बोर्ड ऑफ ट्रस्टी

श्याम चांडक

रमाकांत खेतान

हिरक मेहता

आनंद अग्रवाल

स्वपना चांडक

वंदना मेहता
(मॅनेजींग ट्रस्टी)

## ट्रस्ट की गतिविधियाँ

- निजाम हॉस्पिटल हैद्राबाद कॅन्सर (Oncology), में योगदान
- महेश फाऊंडेशन में योगदान
- महेश शिक्षा कोश में योगदान
- माहेश्वरी धर्मशाला रामदेवरा (राजस्थान) में योगदान
- स्वर्गवाटीका हैद्राबाद हॉल बनाने हेतु योगदान

## प्रतिवर्ष गतिविधियाँ

- महेश फाऊंडेशन हैद्राबाद के मार्फत छात्रावृत्ती (Scholarship)
- ट्रस्ट द्वारे लडकियों को छात्रावृत्ती
- छात्रा पुरस्कार श्रीमती बसंती चांडक
- श्राद्धपक्ष एवंम् नवरात्र में निःशुल्क भोजन
- अनक्लेम डेडबॉडी दाहसंस्कार में योगदान
- धार्मिक पुस्तकों का निःशुल्क वितरण

नास्ति मातृसमा छाया नास्ति मातृसमा गतिः।
नास्ति मातृसमं त्राणं नास्ति मातृसमा प्रपा।।

# श्रीमती बसंतीबाई लक्ष्मीनारायण चांडक

(1927-2010)

# आत्मिक सेवा का प्रतीक - अकोला नेत्र अस्पताल

मन में मानव सेवा की अटूट भावना, परोपकार की सनक और समाज-कल्याण के ध्येय के साथ यदि कोई कोर्य करता है, तो प्रसन्नता और संतुष्टि उस के माथे पर पर राजमुकूट की तरह दमकती है। निस्वार्थ मनोभावना और परपिडा को स्वपिडा कि अनुभुति के साथ जिन सेवा भावी संस्थानो ने समाज मे अपना विशिष्ट स्थान बनाया है, उन्हे अकोला नगर मे चिकित्सा व अन्य सेवा क्षेत्रोमे सक्रिय श्रीमती बसंतीदेवी लक्ष्मीनारायण चांडक चॅरिटेबल ट्रस्ट अकोला व्दारा अकोला नेत्र अस्पताल के माध्यम से कीये जा रहे कार्य अनुकरणिय है। सिमीत किंतू आधुनिक विज्ञान-तंत्र तथा उच्च्य चिकित्सा सुविधा के साथ ही पारंगत स्टाफ की सेवा भावना के बलपर अकोला नेत्र अस्पताल ने अल्प समय मे ही बडी ख्याती अर्जित की है ।

श्रीमती बसंतीदेवी लक्ष्मीनारायण चांडक चॅरिटेबल ट्रस्ट,अकोला के अध्यक्ष श्री श्यामसुंदरजी चांडक के अनुसार ट्रस्ट व्दारा संचालित 'अकोला नेत्र अस्पताल' विगंत ३७ वर्षो से चिकित्सा क्षेत्र मे अपनी अनवरत सेवाऐं दे रहा है । नेत्र उपचार मे आम जनता का विश्वास अर्जित कर इस अस्पताल ने समाज मे अपना एक सन्मानजनक स्थान बनाया है । अस्पताल को सभी समाजोंका भरपूर समर्थन और सहयोग प्राप्त हो रहा है । अस्पताल व्दारा कीऐ जा रहे कार्यो पर समाज के अटूट विश्वास की एक मुहर ही है ।

अकोला नेत्र अस्पताल मे पिछले ३७ वर्षोमे ४० लाख लोगो ने नेत्र रोग चिकित्सा शिबिर मे अपना जाँच कर कर अस्पताल की सेवाओं का लाभ लिया है ।

ट्रस्ट व्दारा सर्वप्रथम नेत्र रोग चिकित्सा सेवा ही प्रारंभ की गई थी, प्राश्चात ट्रस्ट के उत्कृष्ट प्रबंधन एवं सकल उपचार ने चिकित्सा सेवा के कारण अकोला नेत्र अस्पताल की ख्याती दुर-दुर तक फैलने लगी, सेवा की सुकारित गंध से प्रभावित होकर न केवल अकोला नगर बल्कि पुरे जिले भर से लोग यहा आने लगे। लोगो के भारी समर्थन को देखते हुऐ और अन्य मरिजोंके आग्रहपर ट्रस्ट व्दारा अकोला नेत्र अस्पताल ने वर्ष २०१५ से डायलिसिस चिकित्सा सेवा भि प्रारंभ की गई। सर्वप्रथम अस्पताल मे इस उपचार हेतु ६ मशिनेही कार्यरत थी बेहतर इलाज, तत्पर सेवा और गरिबोके विश्वास के बल पर डायलिसिस चिकित्सा-सेवाओंको इतना समर्थन मिला की मात्र ६-७ वर्षो मे ही अस्पताल को और अधिक डायलिसिस मशिने लगाने पडी। फिलहाल अस्पताल मे २५ मशिने संचालित की जा रही है । प्रति माह लगभग १३५० से १४०० मरिज डायलिसिस करने यहाँ आते है। अकोला नेत्र अस्पताल मे इन सेवाओं के साथ ही सरकारी योजनाओंके अंतर्गत जरुरत मंद मरिजोका निशुल्क इलाज किया जाता है । श्रीमती बसंतीदेवी लक्ष्मीनारायण चांडक चॅरिटेबल ट्रस्ट की और से अनेक सेवा भावी उपक्रम चलाऐ जाते है। प्रति वर्ष श्राद्ध पक्ष मे और नवरात्र पर्व मे गरिब लोगो को ट्रस्ट की और से भोजन दान किया जाता है ।

ट्रस्ट व्दारा अकोला मे लावारिश शवों का अतिंम संस्कार किया जाता है । यह माननिय उपक्रम पिछले १० वर्षोसे लगातार जारी है । हर साल लगभग १०-१२ लावारिश शवोंका अंतिम संस्कार किया जाता है । क्यु की हमारी व्यापारिक गतिविधीया हैद्राबाद मे ही संचालित होती है । इसलिये अधिकांश समय हैद्राबाद मे बितता है । स्वभावत हैद्राबादमे ही सामाजिक संबंधोके तहत कुद करणे का भाव मन मे उठा फलस्वरुप हैद्राबाद मे शमशानभुमी -''स्वर्ग वाटीका'' में एक बडे हॉल के निर्माण मे पुज्य माँ श्रीमती बसंतीदेवी चांडक के नाम से आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया है ।

पुज्य माँ बसंतीदेवी स्वंय बहूत पडीलिखी नही थी, किंतू संसारीक व्यवहार-ज्ञान मे वे काफी निपून थी उन्ही के सुझाव और प्ररणा से ट्रस्ट के लडकिंयोंके लिए शिक्षा हेतू स्कॉलरशिप योजना सुरू की है। यह योजना पिछले १० वर्षोसे अबाद रूप मे जारी है। लगभग १२ से १३ युवतीयों को प्रति वर्ष स्कॉलरशिप दि जाती है। जिसमे प्रत्येक छात्रा को १५ हजार रुपये की धनराशी दी जाती है। इस योजना मे हरसाल तकरिबन २ लाख रुपये की रक्कम वितरीत की जाती है। पुज्य माँ के निर्देश पर ट्रस्ट व्दारा ''श्री महेश फॉऊंडेशन,हैद्राबाद'' को शिक्षा कार्य क्र लिए आर्थीक सहाय्यता प्रदान की जाती है। ''महेश शिक्षा कोष, अकोला'' को भी ट्रस्ट व्दारा आर्थिक सहयोग दिया जाता है।

श्रद्धेय मॉ बसंतीदेवी की सोच काफी प्रगतीशिल थी वे साधारण पडीलिखी थी लेकीन उनकी जीवन-दृष्टी और सोच के स्तर से वे किसी विदुषी से कम नहीं थी।उनके हृदय में संवेदना और सहानुभूती के भाव वैसे ही उठते जैसे किसी लेखक या कविं के। हम सब परिजन उनकी इसी सोच से लाभान्वित हुए, यह हमारा परम सौभाग्य है। अपनी मौलिक विचारधारा, लोक से हर कर सोचने की शैली और स्वतंत्र जीवन दृष्टी के कारण ही वे साहित्य के प्रती काफी अनुरुक्त थीं। अतः उन्हीं की प्रेरणा से ट्रस्ट व्दारा देश के किसी भी हिस्से में रचनारत माहेश्वरी समाज की महिला लेखिका या कवयित्री को उत्कृष्ट साहित्य-मृजन के लिए प्रती वर्ष १ लाख रुपये का पुरस्कार दिया जाता है। श्रद्धेय मॉ के विचारोके अनुरूप इससे समाज की महिला लेखिका या कवयत्री मे लेखन के प्रती जागरुकता निर्माण हो सकेंगी। इसी प्रकार ट्रस्ट व्दारा नवोदीत महिला रचनाकार को पुस्तक प्रकाशक हेतू वित्तीय सहयोग भी दिया जाता है। इस पुस्तक प्रकाशन योजना के अंतर्गत २५ से ५० हजार तक की सहयोग राशी स्ट्रस्ट व्दारा प्रदान की जाती है। आज के डिजीटल युग मे पुस्तक के अस्तित्वको बचाये रखने मे और वाचन प्रवृत्ती को बढावा देने मे भी ट्रस्ट की यह योजना अपनी सक्रिय और सशक्त भुमिका निभा रही है।

चिकित्सा, साहित्य व समाज कल्याण के कार्यो के लिए सदैव कटिबद्ध ''अकोला नेत्र अस्पताल'' ने इस यात्रा मे काफी उतार चढाव देखे है। किंतू सेवा की लगन मे कभी ट्रस्ट हताश-निराश नही होने दिया अनेक झंझांवत आऐ, अनेक संकटोंने मार्ग अवरुद्ध कीया, फिर भी पुज्य मॉ मे आशिर्वाद और समाज जनो की शुभकाक्षाओं के सहारे और झंझावतो को पिछे छोडकर यह यात्रा निरंतर जारी रही और आज एक संन्मान जनक स्थान पर विराजीत हो कर अकोला नेत्र अस्पताल समाज जनोको अपनी सेवाऐं समृद्ध रुप मे दे रहा है।

अकोला नेत्र अस्पताल ने डायलिसीस चिकित्साको प्रारंभ करणे मे हमे हैद्राबाद के ''श्री भगवान महाविर डायलिसीस सेंटर'' का भरपूर मार्गदर्शन एवंम सहयोग मिला है। उक्त सेंटर के पदाधिकारी मान्यवर गौतमचंदजी चौरडीया साहब का हमें विशेष सहयोग-लाभ प्राप्त हुआ है। उन्ही ने हमे यह चिकित्सा सेवा सुरू करणे हेतू प्रेरणा दी। हम उनके सदैव ऋणी रहेंगे। लगभग ४ दशक से मेडीकल सेवा श्रेत्रमे सक्रिय श्रीमती बासंतीदेवी लक्ष्मीनारायण चांडक चारिटेबल ट्रस्ट का कुल असेट २० करोड का है। विशेष बात यह है की, ट्रस्ट ने किसी प्रकार का कोई ऋण नही लिया, २० करोड का ट्रान्झकशन स्व-निधी का है। यह स्वंमे एक बडी उपलब्धी है।

-श्यामसुंदर चांडक

# माँ की ममता

माँ ममतामयी, निःस्वार्थ, निश्छल, आत्मीयता की मूरत है।
ईश्वर को देखा है किसने, माँ में प्रभु की सूरत है।
अपने आँचल की छाय का छाता खुला हमेशा रखती है।
दुःख-दर्द असहनीय चाहे जितना पल्लू से आँसू पोंछती है।
खून की बूंद के एक एक कतरे से नवजीवन संजोती है।
वेदना विदित प्रसव पीड़ा को ममता की आड़ में सहती है।
सहनशक्ति की संजीवनी से, सारा कष्ट हरती है।
भूखी रहकर भी ममतामयी, संतान का पेट भरती है।
माँ की ममता अक्षरक्ष सत्य है, पिता भी किसी से कम नहीं।
दिन-रात मेहनत मजदूरी कर निज पास रखते कुछ नहीं ।
मधुमक्खी के छत्ते जैसे मधु दे देते सन्तान को ।
अपनी इच्छाओं को त्याग देते. कैसे भूले ऐसे भगवान को ।
धरा धरणी है हमारा, हर जरूरत पूरी करती है।
सहन शक्ति की देवी पृथ्वा, हर भार हमारा सहती है।
देवी सी दातार धात्री, बदले में कुछ नहीं लेती है।
सुधामयी अमृत बरसाती, निवास सभी को देती है।
प्रकृति परिवर्तित परिस्थिति पाती, ममता मानव पर लुटाती।
हर ऋतु में नए फल उगाती, और सुगंधित फुल खिलाती ।
वृक्ष जहाँ छाया देत, जड़ी बूटियों दर्द हर लेते ।
करुणामयी क्षुधा बुझाती, अनगिणत अन्न उपजाती ।
सर्वशक्तिमान प्रभु की लीला अपरम्पार है।
जन्म से पहले ही शिशु हेतु भरता दूध की धार है।
पशु-पक्षी, मानव और दानव सब उसकी संतान है।
भेदभाव वो नहीं जानते, दया के सिंधु भगवान है।
माँ की ममता धरा की क्षमता, ईश्वर की समता ना भूले हम ।
प्रकृति का नजारा, सबसे प्यारा, इसे नष्ट करें ना हम ।
जन्मभूमि स्वर्ग से ऊपर ममता उस पर लुटाए हम ।
जान की परवा किए बिना, देश सेवा में जुट जाएं हम ।

- सौ. विमला सोनी
कोलकाता

# जीवन

जीवन का है प्रहर ये अंतिम शेष अब कुछ कहाँ रहा है।
जनम मरण के चक्कर खाकर जनम दुबारा यहीं मिला है।
सुन गीता उपदेश मैंने लेखा करम स्वीकार किया है।
अपनों ने ही साथ दिया और अपनों ने ही मुख मोड़ा है। दोष किसी का कहाँ रहा है।
माँ आंचल में मिली है ममता शिक्षा का विश्वास मिला है।
उंगली थाम पिता की मैंने दिशा लक्ष्य पर कदम रखा है।
स्पर्श सफलता पाया मैंने सूरज मेरा भी चमका है। उजला दिन अब कहाँ रहा है।
उमड़े मेघ निराशा के जब उन्हें समंदर पार किया है।
फेरे लेकर शुचि अनि के संग साथी संसार रचा है।
अर्थ संबंधों का समझा मैने खट्टा मीठा स्वाद चखा है। खुला विहान अब कहाँ रहा है।
बचपन ने दी पायल दस्तक किलकारी का बंधा समा है।
भोली नन्ही बातें सुनकर छलकी खुशियों की गागर है।
मन में भरी जो भारी यादें हलकी आज हुई सभी है। पाने अब कुछ कहाँ रहा है।

-डॉ सुरभि दत्त

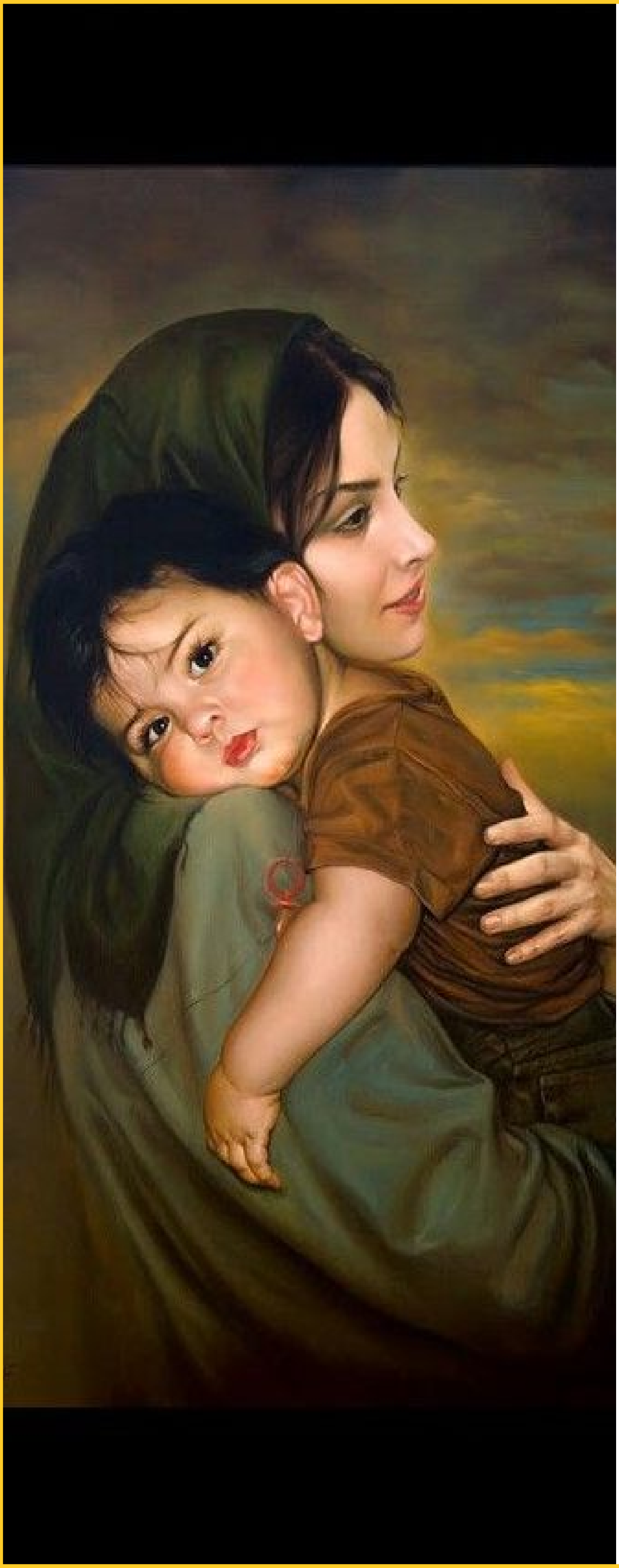

# MOTHER'S DAY

One day a woman looks
at their child with a smile
Not knowing how they may grow up
Sitting in the hospital chair
After nine long months of pain and despair

There is something in a mother
Is it her kindness
Is it her warmth
Or is it her connection to her child
Has been with her And weeks
Given that this child
For many long months
And days?

I see no one stronger than a mother
Someone who struggles to raise child
Someone who struggles to put forth
Food on the table
Someone who may work
But maybe not

I see no one stronger than my mother
Children who are both still growing
Still trying their best
And maybe they don't always listen
But they still love her nonetheless
They will always love her

**- Khushi Bhutra**
**New York**

# FRIENDSHIP

Friendship, what is it?
Is it a feeling of being special?
That someone will always
be with you?

Friendship, what is it?
Is it a fragment of our imagination?
Is it a game that makes or
breaks our heart?

Friendship, what is it?
Is it a warm hug in your time of need?
A friendly smile or just a good deed?

Friendship,
It is more than just my imagination..
More than just a game.
More than just a good deed

Friendship, I want it
I want that special feeling
I want you to complete my heart
1 want your feeling of support
I want those warm hugs
& friendly smiles
Because your friendship
is what it means

**Dea Mehta**
Pune

# FAMILY

**Khushi Bhutra**
**New York**

My family is an ice cream sundae
Each person is a different item
Then all those parts make the yummiest
Ice cream sundae ever

My dad is the bowl, he takes care of us
Just like the bowl takes care of the sundae
He makes sure everything doesn't fall apart
He's very structured very specific
Like a bowl would be
But we all fit in within his boundaries
He gives us shape
And stops us from flowing away

My mom is the brownies
She makes everyone feel happy
And at peace she's often a sweet treat
Very rich and soft

My brother is the yummy chocolate sauce
He always gives the family more taste
One of the most important parts of our family
A very necessary part of the sundae
Even if it's the smallest

I am the ice cream, I'm very smooth
Very still and serene, Very chill as well
There's not much to me
But there are the things that make me special

# SHYAM & SARLA CHANDAK

Sarla and Shyam Chandak are family but so different from every other family member. Their zest for life is unparalleled and remarkable. If I could identify one trait in them, it's that they are undefeatable. This is not chance but choice. They have chosen not to let circumstances overwhelm them. This is evident in everything they've done in life.

Their choices are nothing short of awe- inspiring, and an example to others. The one thing that defines these, whether good or not. is that they were never safe, risk-free choices. Their decisions have always pushed the envelope of what is possible: Both their daughters, brilliant professionals, are living testimony to how differently these two viewed parenthood. In every walk of life, their business enterprises, the cities and localities they inhabited. their lifestyle, they have trodden a less obvious path. They have always been a voice of 'why not do more and never advocated the balanced, wise, stable views that elders usually profess. They have never shied away from taking on more responsibility, and finding more avenues for their abilities. They have never subscribed to convention. I have personal experience of this.

When I was a quiet college lad back in the 1980's, Shyam Chandak was the only uncle who encouraged me to wear more denims and t-shirts, and also raised the subject of girlfriends, a taboo in the family in those days. He was delighted when I went for a trek to the Himalayas. Even after six years in college hostels. I had no experience with alcohol. That changed one afternoon at a swanky Bangalore hotel when I had my first beer in life with Shyam Chandak! In the current phase of their life, I admire the enthusiasm that Sarla and Shyam bring to the Smt.Basantibai Chandak Hospital's Dialysis Unit in Akola, Setting it up and driving it like a start-up from scratch and inspiring many others to join the effort with their own sense of purpose, is not just admirable but also rare. Their energy and drive around this project would put many youngsters to shame. Their conviction and bellet in the idea has brought it to fruition in spite of the challenges of funding. organisation and other resources. This is even more admirable considering that their hometown isn't Akola but Hyderabad, which means that all this has been done through remote working.

When we think of senior citizens, we think of retirement, putting up one's boots and taking time off Sarla and Shyam Chandak have ably demonstrated the other meaning of seniority, of using their experience, network and resources at this stage of life to make a difference to society. The combination of youthful thinking and age-driven experience has been a catalyst in their contribution to society, contribution that's going to remain a permanent legacy Folks like this always inspire everyone around them to live a life doing more that what's expected. More power to their wings and projects. I remain a grateful student of their way of life.

**Damodar Mall**
CEO, Reliance Retail

# ३० नवम्बर २०१९ की वह अविस्मरणीय संध्या

यादों के अमित पटल पर स्थायी रूप से अंकित है. २० नवम्बर २०११ की वह अविस्मरणीय संध्या जब अकोला में एक भव्य समारोह में मुझे अपनी प्रथम प्रकाशित पुस्तक खुशी के मोती (बाल कथा संग्रह) के लिए बसंतीबाई एल. एन. चांडक महिला साहित्यकार पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मुझे एक क्षण के लिए भी नहीं लगा कि मैं पहली बार सबसे मिली सबसे इतना स्नेह और सम्मान मिला जो मेरे जीवन की अमूल्य रहेगा। निधि के रूप में चिर स्थायी रूप से संचित

कहते है साहित्य समाज का ज्वलंत चित्रण करके इतिहास के पन्नो में अपना स्थान सुरक्षित करता है। साहित्य की रचना जिस साहित्यकार द्वारा की जाती है. उसे समाज में सम्मानित करना अपनेआप में गौरव का विषय है और श्रीमती बसंतीबाई एल. एन. चांडक चेरिटेबल रिसर्च फाउंडेशन, अकोला ने इस परंपरा की शुरुआत की. इसके लिए इसके समस्त पदाधिकारी बधाई के पात्र है।

ट्रस्ट के प्रधान न्यासी आदरणीय श्यामजी चांडक के द्वारा प्रति वर्ष उत्कृष्ट माहेश्वरी महिला साहित्यकार को उनकी उत्तम प्रकाशित कृति के लिए पुरस्कार प्रदान करना सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अगला प्रशंसनीय कदम है जिससे महिला साहित्यकारों की लेखनी को उन्नति की धार मिलेगी और समाज और देश को सांस्कृतिक संबल महिला साहित्यकार को पुरस्कृत करना अपनेआप में महन दूरदर्शिता का परिचायक है क्योंकि महिला अपने परिवार का केंद्रबिंदु और भावी पीढ़ी की कर्णधार होती है। उनका साहित्य दायित्व बोध से ओत-प्रोत होता है।

पुरस्कार प्राप्त करने के बाद से मेरे जीवन में सुखद परिवर्तन आए. सर्वप्रथम तो अपने समाज से गहरे रूप में जुड़ने का स्वर्णिम अवसर मिला। समाज के लिए कुछ अच्छा करने की प्रेरणा भी मिली। जीवन यात्रा में लेखन महत्वपूर्ण साधन बनकर मेरा मार्गदर्शन कर रहा है। पुरस्कार हमें निश्चित रूप से प्रोत्साहन और संबल प्रदान करते हैं और सामाजिक जागरूकता के लिए कल्याणकारी कार्य करने की प्रेरणा भी देते हैं।

इस के अतिरिक्त भी श्रीमती बसंतीबाई एल. एन चांडक चेरिटेबल रिसर्च फाउंडेशन, अकोला द्वारा अन्य कई सामाजिक कार्य किये जा रहे हैं जिनमें से प्रमुख है बसंती अस्पताल का संचालन जो कि निम्नतर दरों पर चिकित्सीय सहायता प्रदान करता है। इस अस्पताल में दो लाख से कम वार्षिक आय वाले माहेश्वरी परिवार के मरीजों को डायलिसिस की सुविधा भी निःशुल्क प्रदान की जाती है। वसती अस्पताल दक्ष मेडिकल दल और आधुनिकतम उपकरणों का उपयोग करके जनहित का पावन कार्य कर रहा है। ट्रस्ट शिक्षा के लिए नियमित रूप से प्रतिवर्ष कन्याओं को छात्रावृत्ति और सहायता भी देता है।

मैं आदरणीय श्यामजी चांडक, आदरणीय रमेशजी परतानी और चयन समिति के समस्त पदाधिकारियों को हृदय तल से धन्यवाद और शुभकामनाएं देती हूँ जिन्होंने अपनी उन्नत सोच और उदार दृष्टिकोण से माहेश्वरी समाज और देश को गौरवान्वित किया है। उनकी क्रियाशीलता प्रेरक, अनुकरणीय और अत्यंत सराहनीय है ।

**सुश्री. बबीता माँधणा** (हावडा)

(बसंतीबाई एल. चांडक माहेश्वरी महिला साहित्यकार पुरस्कार २०१९ से सम्मानित)

# स्त्री सम्मान की पराकाष्ठा स्त्री सम्मान के साथ

बालक के मन में मां संस्कारों के बीज बोती है जो समय के साथ पल्लवित, पुष्पित होता जाता है निरंतर। जो आगे जाकर अपने कौशल से संपूर्ण दक्षता और क्षमता का प्रयोग करके चिंतना के बल पर समाज का रोल मॉडल बनकर उभरता है।

27 दिसंबर 2020 का दिन, ठिठुरती सुबह, नागपुर होटल की दूसरी मंजिल के अतिथि परिसर में मेरी मुलाकात हैदराबाद के उद्यमी एवं श्रीमती बसंतीबाई लक्ष्मीनारायण चांडक चैरिटेबल रिसर्च फाउंडेशन, अकोला के मुख्य ट्रस्टी श्याम जी चांडक से होती है। श्याम जी ने हीं फोन पर मुझे श्रीमती बसंतीबाई चांडक माहेश्वरी महिला साहित्य लेखन प्रतियोगिता-2020 की विजेता होने की सूचना दी थी। मैं स्वंय भी उनसे मिलने की उत्सुकता मन में लिए थी। माहेश्वरी समाज महिला साहित्य लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए एक महिला के नाम से एक बड़ी राशि ₹ 1,00,000 और 100 ग्राम चांदी के सिक्के से पुरस्कृत करने की योजना मुझे भी उस क्षितिज रेखा पर रेखांकित कर रही थी। हम सब जानते भी हैं। कहते भी हैं और लिखते भी हैं कि महिला समाज की धुरी है। उसका पढ़ालिखा होना समाज की संपन्नता का प्रतीक है। उसका साहित्य में प्रवृत्त होना संपन्नता के वैभव का प्रतीक है।

कौन है श्रीमती बसंती देवी, यह प्रश्न मन में था कि पत्नी है या मां, बहन या भाभी? कौन है यह प्रेरणाता? जिनकी स्मृति में इस मिथक को मूर्त रूप दिया गया? जब मुझे पता चला श्रीमती बसंतीबाई चांडक श्री श्याम जी चांडक की माताश्री हैं तो मेरा मन गर्व से भर गया। विदुषी मां ने अपने पुत्र को समाज हित में सार्थक चिंतन दिया। फलस्वरूप समाज सेवा के लिए वह पूरे मनोयोग से अपने परिवार, कुटुंब और मित्रों के साथ लेकर प्रवृत हुए।

यहां मेरी मुलाकात विद्वान रमेश जी परतानी से होती है जो जो एक उद्यमी चिंतक होने के साथ पुरस्कार समिति के परामर्शदाता भी हैं। आयोजित प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में उनकी अहम भूमिका रही। बातचीत में यह बात उजागर होती है। "अध्यात्म का वह दिन", मेरी लिखी यात्रा साहित्य की इस पुस्तक पर उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए अपनी बातचीत को मेरे कृतित्व एवं जीवन की दिनचर्या पर केंद्रित किया।

मेरी चुनिंदा पुस्तकों और साहित्य को समर्पित सलिला संस्था की वार्षिक पत्रिका के कुछ अंक दोनों श्रेष्ठी जन को इस पावन अवसर पर भेंट किए। श्रीनाथजी का नाथद्वारा से लाया हुआ प्रशाद मेरे पति जगदीश भंडारी और पुत्री कपिला ने उन्हें भेंट किया।

कोरोना महामारी के कारण चारों और डर का माहौल, सरकारी प्रतिबंध की पालना करते हुए 50 लोगों की उपस्थिति में भव्य आयोजन करने की प्रतिबद्धता लिए नागपुर के अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के संयुक्त तत्वाधान में वहां के कार्यालय में इसे मूर्त रूप दिया गया। समाज के उन्नयन हेतु यह मानसिक विचारों की खाद वृहत्तर समाज जन में पहुंचाने के लिए इसके ऑनलाइन प्रसारण की व्यवस्था करके देश और विदेश से इस कार्यक्रम को जोड़ा गया। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष, श्याम सुंदर जी सोनी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

इस कार्यक्रम के दौरान अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा महिला संगठन की अध्यक्ष एवं सचिव ने भी ऑनलाइन से अपने विचार व्यक्त किए। ऑनलाइन कार्यक्रम का दूसरा हिस्सा माहेश्वरी महिला कवि सम्मेलन का भी था।

प्रथम भाग पुरस्कार का ऑफलाइन था जिसका लाइव प्रसारण हुआ। मंच पर श्याम जी चांडक, श्याम सुंदर जी सोनी का उद्बोधन हुआ। जिसमें उन्होंने समाज हितार्थ किए गए कार्यों और भावी योजनाओं को रेखांकित किया। पुरस्कार विजेताओं की घोषणा के बाद रमेश जी परतानी ने पुस्तक पर चर्चा की और फिर मुझे मंच पर पुरस्कार ग्रहण करने का आमंत्रण दिया।

पुरस्कार लेने का वह पल भावविभोर कर देने वाला था। माहेश्वरी समाज के अग्रज द्वारा सजाए गए इस मंच पर सम्मान के गौरव से अभिभूत थी। किसी लड़की के जन्म को बोझ और तिरस्कार की नजर से देखे जाने वाली मानसिकता के दौर तत्कालीन समाज का रहा हो। जहां केवल समाज ही नहीं खुद उसके जनक उसे दोयम मानते रहे हो, हालांकि अपवाद भी थे। मेरे पिता ने कभी मुझे अपने पुत्र से कम नहीं माना। अपने सामर्थ्य और समग्रता से मेरा लालन-पालन किया फिर भी हम जिस समाज में जीते हैं वहां लड़की के लिए वर्जनाएं अधिक है। पैरामीटर अलग है। लिंगभेद का दंश तमाम उम्र उसके विकास में पीछा नहीं छोड़ता। वहीं, उसी समाज में स्त्री को उसके कौशल के कारण नवाजा जाए तो समस्त परिवारजन का, नगर वासियों का और खुद स्त्री का सीना गर्व से भर जाता है। स्मिता गर्व के इसी उन्माद को मैंने उन क्षणों में जिया है। साथ ही चैतन्य मन ने मेरी कलमकर्म के प्रति प्रतिबद्धता को गहरा करने के साथ इसकी गुणवत्ता को समाज हितार्थ बनाने के प्रति जागरूक भी किया है। मेरी जिम्मेदारी बढ़ी है। जवाबदेही भी बढ़ी है।

इस मंच से सीखा है। अकोला स्थित हॉस्पिटल में किडनी डायलिसिस को निःशुल्क करने के मन्तव्य को देखा और समझा है। नेत्र चिकित्सालय और समाज हित में उनसे जुड़ा पुस्तकालय के महत्व को रेखांकित करने वाले वीडियो देखें हैं। हॉस्पिटल के साथ पुस्तकालय का प्रावधान उनकी उन्नत सोच का ही परिष्कृत परिणीति है। जब कोई अच्छा करने की सोचता है इस विचार को पोषण देने के लिए कई हाथ, साथ देने आकर जुड़ जाते हैं। प्रेम-आदर, आथित्य और सम्मान से भरी स्नेहिल गठरी में भर के सुनहरी यादें संजोए, कुछ नागपुर के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों को देखकर फिर से अपने नगर सलूंबर लौटा आई। जहां परिजन और समाज के इष्ट मित्रों ने दीप सजाकर आरती उतारकर फूलों का हार पहना कर मेरा स्वागत किया।

- **डॉ. विमला भंडारी**
पुरस्कृत साहित्यकार
सलूंबर-राजस्थान

# साक्षरता मिशन

कृष्णकुमार शर्मा

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की
चपेट में आ कर
एक अंगूठे से कहा
हमने मुस्करा कर,
''भई अंगूठे । जरा इधर आओ,
अपनी एक पहचान बनाओ,
अंगूठा एक कलंक है, इसे मिटाओ'',
अंगूठा बोला - ''हाथ मिलाओ,
मैं भी बरसों से इसी ताक में हूँ,
अंगूठे से अक्षर बनने की फिराक में हूँ,
लेकिन एक बात तो बताईये,
मुझ अनपढ को जरा समझाईये,
अंगूठे से अक्षर बने हुए ये लोग,
पढ-लिख कर अकड से तने हुए ये लोग,
क्या अक्षरों का मर्म पहचानते हैं ?
बेईमानी, रिश्वत, घोटाला, भ्रष्टाचार, अपहरण,
बलात्कार और हत्या जैसे शब्दों को
आत्मसात् करने वाले
साक्षरों की करतूतें देख-देखकर
मैं यही कहना चाहता हूँ,
मैं अंगूथा हूँ, अंगूठा ही रहना चाहता हूँ,
भाई साहब, साक्षरता मिशन को
अब कुछ इस तरह से
आगे बढाया हाये
कि शब्द और अर्थ का भेद जानने के लिए
हम निरक्षर को ही नहीं
साक्षर को भी पढाया जाये । ''

अस्पताल

अकोला नेत्र अस्पताल

अकोला
नेत्र अस्पताल

नेत्र अस्पताल

AKOLA EYE HOSPITAL

अस्पताल

WEL COME

श्रीमती बासंतीबाई लक्ष्मीनारायण चांडक रिसर्च फाउन्डेशन
बसंती हॉस्पीटल
AKOLA EYE HOSPITAL
AKOLA DIALYSIS CENTER

रामदास पेठ

HOTEL
Shagun

लक्ष्मीनारायण
फाऊन्डेशन

बसंती हॉस्पीटल
COVID-19 VACCINATION
कोविड टीकाकरण

भोजन मात्र १रु. मे
बसंती हॉस्पीटल

# गौ-धन

माता निर्माता भवति अर्थात जो निर्माण करे वह माता है। भारत में माता शब्द का प्रयोग विशेष रूप से इन्हीं तीन के लिए हुआ है. जननी. धरती माता और गौ माता । वेद में भी गौ को माता ही कहा है गावो विश्वास्य मातर अर्थात गौ माता सब प्राणियों की रक्षा करने वाली है। जन्मदायिनी माँ हमारे संस्कार बनाती है, शैशव में हमारा लालन पालन करती है। उससे आगे बढकर गौमाता अपने सभी शुक्र लक्षणों से युक्त होकर राष्ट्र निर्माण के महान उत्तरदायित्वों को अपने कंधों पर लिये हुए हैं। ऋग्वेद के मंत्र में गाय के मातृ स्वरूप का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां । स्वसादित्यानाममृतस्य नामिः ।

प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय । मा गागनागामदितिं वधिष्ट ।।

इस मंत्र में गाय के आध्यात्मिक स्वरूप का परिचय दिया गया है। गौ को अमृत की नामि बताते हुए कहा गया है। अमृत बह्मतत्व को कहते हैं. जो कभी भी मृत्यु के समीप नहीं जाता. यह गाय उसका हेतु. इसीलिए उसे 'आदिति' कहते हैं। प्रजापति की शक्ति आदिति गौ है। जैसे माता अपनी संतान का सर्वथा हित करती है. ऐसे ही गौ भी जगत के हित के लिए प्रकट हुई है। इससे कोई भी अपराध नहीं होता इसलिए श्रुति अर्थात वेद इसे अनागा अर्थात निरपराध बताती है। सारे संसार को नियामक पराशक्ति ही आदिति कही जाती है। अदिति रुपि गाय की सेवा जगन्माता की ही उपासना है।

आत्मत्याग तथा वात्सल्य भावना की प्रतिमूर्ति, सेवा, नम्रता, मृदुता सहिष्णुता, धैर्य, प्रेम, सहानुभूति आदि सब ही जननी सुलभ गुणों की केन्द्र गौ की प्रशंसा में भारतीय प्राचीन साहित्य का कोई ऐसा ग्रंथ नहीं है जिसमें उसकी चर्चा न आई हो। पृथ्वी की मान मर्यादा को सुरक्षित रखने वाली सात शक्तियों में गौ को प्रथम स्थान दिया गया है।

गोभिर्निप्रेश्च ने दैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः

अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ।

गौ, ब्राह्मण वेद, पतिव्रता देवियाँ, सत्यक्त्ता, निर्लोभी और त्यागी इन सात के कंधो पर पृथिवी की प्रतिष्ठा रहती है। गोपाल नाग से पूज्य चन्द्रवंशी योगीराज श्री कृष्ण ने यही कामना की -

गावो में अग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः ।

गावो में सर्वतः सन्तु गवां मध्ये वासम्यहम् ।

अर्थात गायें गेरे आगे हो, मेरे पीछे हों. गायें मेरे सब ओर हों मैं गायोंके मध्य वास करूँ । श्री कृष्ण इस उत्तम भावना के पीछे वही वेदोक्ति है। जिसमें गाय को सर्वदेवगषी स्वीकार करते हुए कहा गया हैं

'सर्वेदेवाः स्थिता देहे सर्वदेवमयी ही गौः

' गाय के शरीर में सभी देवताओं का निवास है, अतः यह सर्वदेवगयी है। महाभारत के अनुशासन पर्व में भी रचयिता व्यास ने गौ का वास्तविक वर्णन कर अपने को धन्य माना है। वे लिखते हैं।

''गोभिस्तुल्यं न पश्यमि धनं किश्चिदिहाच्युत,
गावो लक्ष्म्याः सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते ।

संसार में गौधन के समान कोई धन नहीं है। गायें लक्ष्मी (सम्पन्नता) की भूल है पाप उन्हें छू तक भी नहीं गया । आगे चल कर इसी अनुशासन पर्व में बह्मा जी द्वारा इन्द्र को गाय का महत्व बतलाते हुए लिखा है -

यज्ञांगं कवि गावो यज्ञ एव च वासव एताभिश्च बिना यज्ञो न वर्तेत कथचन ।।
धास्यन्ति प्रजाश्च पया हविषा तथा एतासां तनयाश्चापि कृषियोगमुपासते ।।
जनयन्ति च ध्यान्यानि बीजानि विविधानि च तता यज्ञाः प्रवर्तन्ते हव्यं कव्यं च सर्वशः ।।

..... महा. अनु. ८३.१७.२९

अर्थात् गायें यज्ञो का अंग है बल्कि वे स्वयं भी साक्षात यज्ञरूप है। इनके बिना यज्ञ किसी भी प्रकार नहीं हो सकता। यह अपने दूध और घी से प्रजा का पालन पोषण करती है तथा इनकी सन्ताने (बैल) खेती के काम आते हैं और तरह तरह के अन्न, बीज उत्पन्न करने में सहायक है। जिसने यह संपन्न होते है और हव्य कव्य का कार्य चलता है।

गौ शब्द 'गम गतौ' धातु से बना है, जिसका अथ, गति, प्राप्ति, ज्ञान और मोक्ष है, जिससे इन चारों अर्थोकी प्राप्ति हो, उसे वेद में गो कहा है। इसके अतिरिक्त गौ का अर्थ वाणी, किरण, पृथ्वी प्राणीविशेष, इन्द्रिय आदि किये जाते हैं। वेदों में प्राणीविशेष के रूप में कल्याणकारी होने से भारतवर्ष में इसका स्थान पूज्य माना गया है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थोंकी प्राप्ति का हेतु माना गया है। ऋषि मुनियों ने भी सर्वस्व के त्याग में गौ का त्याग नहीं किया। मो सेवा को वे अपना सौभाग्य समझते थे । 'कामधेनु' संज्ञक गौ की महर्षि वरिष्ठ ने अपनी याज्ञिक क्रियाओं के लिये परम पुण्यदायी मान कर सेवा की। चारो आश्रमों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास के निर्वाह में गौमाता का महत्व अतुल्य है। राजा दिलीप और राजरानी सुदक्षिणा ने वशिष्ठ आश्रम में वर्ष भर नन्दिनी गाय की सेवा की और इस सेवा से उन्हे पुत्र अज प्राप्त हुआ। गाय हमारी हर कामना की पूर्ति करती है. इसलिए जहाँ उसे कामधेनु कहते है वहाँ वह हमारे स्वास्थ्य की भी सर्वोत्तम संरक्षिका है। इसी कारण वैदिक भाषा में उसे अमृतनाभि और पीयूषनाभि कहा जाता है। आन्तरिक शुद्धि करता है इसका दूध और बाह्य शुद्धि करती है उसकी सेवा। यज्ञ और दान को तो मुख्य स्तम्भ ही गौ है। उसके अभाव में दोनो क्रियाएँ अधूरी है। । भारतीय परम्परानुसार भोजन में सबसे पूर्व गोग्रास निकाल कर गाय को पूज्य और महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाता है। यह प्रथा बहुत से परिवारों में प्रचलित हैं।

भारत के महापुरुषों और संतजनों ने पवित्र विचारों का संग्रह सन्मार्ग पर चलने वाली संताने और स्वस्थ शरीर को निजि सम्पत्ति की श्रेणी में रखते हुए गौर धन को सर्वोत्तम धन माना है जो इन सभी का कारक है। सोना, चांदी, हीरा और अन्य सभी रत्नों को भीषण आकाल निगल जाता है। परन्तु जिसके पास एक भी दूध देने वाली माय है वह जंगल में किसी धरती

के टुकड़े को उर्वर बना कर फिर अन्न से कोठार भरने आरम्भ कर देगा। पौराणिक साहित्य में सम्भवतः गौ की विलक्षण क्षमता के कारण ही उसे वैतरणी को पार कराने वाली गौ माँ बताया है। इसका यही है कि जो बड़े से बड़े संकट से भी पालक को पार लगा देती है।

संस्कृत साहित्य में गौ से सम्बन्धित एक अन्य शब्द है गवेषण। जिसका अर्थ है किसी वस्तु की गहराई में पहुँचना अथवा तत्व की खोज करना। परन्तु इस शब्द की उत्पत्ति भी भारत के गोधन की बहुलता ही से सम्बन्ध रखती है। प्रातः काल गोचरो में चर कर सान्ध्य बेला में लौटते समय गायों के समूहो के पवित्र खुरों और स्वासों से टकरा कर जो धूलि आकाश में व्याप्त हो जाती है. इसी कारण उस सुहावनी बेला का नाम भी प्राचीन आर्योने गोधूलि बेला रखा गया।

गांवः सर्वभूतांना गावः सर्वसुखप्रदान' गौ माता के इस योगक्षेम स्वरूप का स्तुति करते हुए भारतीयों द्वारा अपनी देकि पारिवारिक व्यवस्था में भोजन में सबसे पूर्व गोरास निकाल कर गाय को पूज्य और महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया। आज भी गोग्रास निकालने की प्रथा बहुत से परिवारों में प्रचलित है।

आध्यात्मिकता की पुण्य स्थली यज्ञ वेदी पर पुरोहित की सबसे बड़ी दक्षिणा गा ही होती थी। गौदान को सर्वोत्तम दान माना गया है। कन्या के पिता वर को गाय देकर ही भारतीय मर्यादा को जीवित रखते थे। गाय वैदिक काल से ही भारतीय धर्म और संस्कृति सभ्यता - की पीक रही है। स्वयं वेद गाय को नमन करता है। अधन्ये। ते रूपाय नमः (अर्थव शौन १० १० १ पेप्य १६. १०७. १) अर्थात हे अवध्य गौ। तेरे स्वरूप को प्रणाम है। ऋग्वेद (१.१५४.६) के अनुसार 'जिस स्थल पर गाय सुखपूर्वक निवास करती है, वहीं की रज तक पवित्र हो जाती है, वह स्थान तीर्थ बन जाता है। हमारे जन्म से मृत्यु पर्यन्त सभी संस्कारों में पञ्चगण्य और पञ्चामृत की अनिवार्य अपेक्षा रहती है। चान्द्रायणादि महाव्रतो एवं यज्ञों में पचगण्य पीने का विधान न है, जिसमें गोमय- गोमूत्र मिश्रित रहते है यह उल्लेख मिलता है गोमि मरसंर श्रृणीत जब कोई अतिथि घर में आता है पञ्चगण्य से नैवेद्य बनाया जाता है। गोमूत्र को गंगाजल के समान पवित्र मान गया है। शास्त्रों के अनुसार हमारे अंग- पत्यंग, मांस-मज्जा, चर्म और अस्थि में स्थित पापों का विनाश पञ्चगव्य के पान से होता है। गाय के बहुत से गुणो का वास गोबर में होता है इसी लिए इसे गोमय कहा जाता हैं। चरक संहिता में गोमय के सम्बन्ध में कहा गया है कि यह कीटकनाशक है। इसकी गंध मात्र से यक्ष्मा आदि के सूक्ष्म किटाणु नष्ट हो जाते हैं। गोमुत्र के संबंध मे चरक कहते हैं। गव्यं

सुमधुरं किञ्यिद् दोषघ्नं कृमिकुष्ठनुत्
कण्डूघ्नं शमयेत् पीतं सम्यग्दोषोदरे हितम् ।।

कृमि रोग, कुष्ठ रोग, खुजली, प्लाहा (तिल्ली) रोग में गोमूत्र के सेवन करे से ये सभी रोग दूर होते हैं।

आयुर्वेद के प्रमुखतम ग्रंथ चरक में गाय के दूध की प्रशंसा करते हुए कहा है क्षीरं जीवयति अर्थात यह दूध जीवन दाता है। यह स्वादिष्ट सात्विक और रोग नाशक है। (गाय के दूध में कैरोटीन तत्व के कारण पीलापन होता है जो इसमें पाये जाने वाले ए.बी.सी.डी.ई. आदि विटामिनों को सुरक्षित रखता है)

अथर्ववेद में गाय की महिमा का गुणगान करते हुए मंत्र है-

एनीधांना हरिणीः इयेनीरस्य कृष्णा थाना रोहिणीर्थेनयस्ते
तिलवस्या ऊर्जमस्मै दुहाना विश्वाहा सन्तवनपस्फुरन्ती ।।

(१८.४.३४).

श्रुति मंत्र कहता है -  चित्रवर्ण की कपिल वर्णवाली गोएँ. नील वर्ण को, श्वेत वर्ण की. काले रंग की रोहिणी लाल रंग की गौएँ इस लोक के धारण-पोषण में समर्थ होती हैं और इन्हें धाना भी कहा जाता है। ऐसी दुधारु जाये तुम्हें प्राप्त है। सौ ही श्रुति गौधन के कल्याणार्थ कह है सब धेनु निरापद निराकुल होकर सुखी एवं निर्भय विचरे ।

यह मंत्र सभी के योगक्षेम की मंगल कामना करता है कि जो तुम्हारे लिये हित कर और कल्याणप्रद है उसकी रक्षा और वृद्धि हमारा धर्म है। धेनु के रंग की विशेषता ही है कि उसके दूध में उसके अपने रंग के अनुसार रविराईमयों का प्रयोग करता श्रेयस्कर है। पाण्डु रोग के लिए लाल रंग की गाय का दूध, यक्ष्मा रोगी को कपिला गाय का और दया वाले को काली गाय का दूध श्रेयस्कर माना गया है।

धेनु सदनं (अथर्व ११.१.३४) गाय सम्पत्तियों का भंडार है। इसे स्वीकार करते है अन्य मंत्र ४.५ २१ में वेद कहता है-

गावो भगो गाव इन्द्रो म इच्छाद गावः गोमस्य प्रथमस्य मक्षः । इमा या वाव स जनास इन्द्र इच्छात्रि दामनता चिन्द्रमा गोएँ हमारा मुख्य धन हो, इन्द्र गोपाल्क हमें गी धन प्रदान करें, क्योंकि यह धन सम्पूर्ण विश्व का पालन है। यही सारे विश्व का जीवन है।

गौमाता के जीवन प्रदाता गुण का गुणगान करते हुए वेद मन्त्र है-

वशां देवा उपजीन्ति वशां मनुष्या उत<br>
वशेदं सर्वमभवद् यावत सूर्योविपश्चति ।।

(अथर्व १०.१०.३४)

इस मन्त्र में यही कहा गया है कि इन्द्र आदि देवगण मौ प्राय से अनुप्राणित होते है और मनुष्य श्री गाय के दुग्धादि से जीवन प्राप्त करता है। जहाँ तक सूर्य देखता है अथवा प्रकाश करता है वहाँ तक मौ द्वारा ही यह समस्त ब्रह्माण बना हुआ है।

वैदिक संस्कृति में आच्छादित कारुण्यरूपा गो माता की महानता और महत्ता का गुणगान 'गौकरणानिधी (१८३ संग्राम के तुरन्त पश्चात) में सविस्तार करते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसे मानवमात्र की संरक्षिका कहा है। विश्व की अनमोल निधि और प्रथिनि की संरक्षिका के संरक्षण हेतु स्वामी दयानन्द ने भारत की तत्कालीन और सर्वप्रथम गोशाला रेवाडी में स्थापित कर मोकृष्टादि रक्षिणी सभा के से तथा उपदेशमंजरि' में संकलित उपदेशों के माध्यम से अहिंसा परमो धर्म की वैदिक वाणी को गुंजरित किया।

श्रुति मन्त्र यही कहते हैं कि संसार में गो के समान कोई धन नहीं है। ये गोएँ मनुष्य जाति की परम ऐश्वर्यस्वरुपिणी है। 'गोस्तुमात्र न विद्यते (यजु २३- ४८) के माध्यम से प्रत्येक विचारशील मनुष्य को संदेश दिया गया है कि ऐसी ऐश्वर्यवास निरपराध और अवध्य गौ का वध न करे गौ वध अक्षम्य अपराध है। गौ माता पूजनीय है इस भाव को प्रकट करते हुए यह कहा गया है। कि इन्द्र, वरुण, अग्नि वायु आदि के समान अदिति अर्थात गो माता की वन्दना और सेवा धर्म का अनुपालन किया जाना चाहिए।'  वस्तुतः भारतीय संस्कृति की प्रतीक और भारतीय जीवन को रीढ़की हड्डी गो धन की रक्षा और सेवा मे ही हमारा सर्वस्व सुरक्षित है ।

गोसेवा मनुष्य का परम धर्म है।

गोसेवा व्रत सभी का मुख्य कर्म है।

गोसेवा नहीं की जिसने, खोया उसने जीवन ।

गोसवा के निमित्त करो अरपन तन् - मन् - धन

# बसंती हॉस्पीटल

## (उपलब्ध सुविधा)

### नेत्र विभाग

- मोतीबिंदु करीता फेको फोल्डेबल लेन्स् शस्त्रक्रिया (बिना टाक्याची)
- लेझर सुविधा
- टेरिजिअम ऑपरेशन (पर्दा काढणे)

### डायलीसेस सेंटर

- २१ अत्याधुनिक डायलीसिस मशीन
- महात्मा ज्योतिबा फुले जीवनदायी आरोग्य योजना उपलब्ध

### जनरल फिजीशियन (आयपीडी)

- जनरल वार्ड
- अतिदक्षता विभाग (आय.सी.यु.)
- कार्डियोग्राम
- वेंटीलेटर
- पॅथोलॉजी लॅब
- डायबीतीज
- हृदयरोग
- दमा
- या सारख्या आजारांवर योग्य उपचार

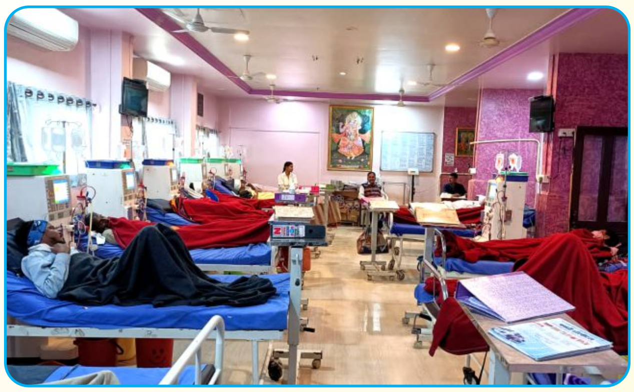

### अस्थिरोग विभाग

- फ्रॅक्चर ॲक्सिडेंट (आय.सी.यु.)
- मणक्याचे आजार व शस्त्रक्रिया
- ट्रॉमा
- दुर्बीणीद्वारे ऑपरेशन
- संधिवात
- लहान मुलांचे फ्रॅक्चर
- सांधे प्रत्यारोपण (जॉईंट रिप्लेसमेंट)

**त्याधुनिक सुविधेयुक्त सुसज्ज ऑपरेशन थिएटर**

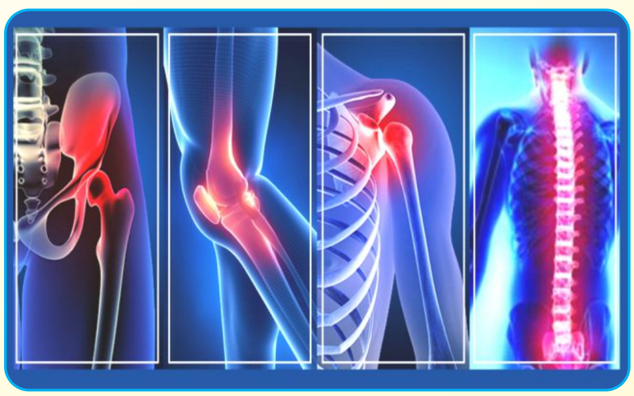

Supermedistore.com ™

# SURGICAL INSTRUMENTS & CONSUMABLES

Add. :
Ramdaspeth, Akola 444005
Email : supermedistore @gmail.com

**Contact : 9322466862**
**Web : www.supermedistore.com**